

श्रीः  
श्रीमते रामानुजाय नमः  
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः  
श्रीगुरुपरनपुराधीशाय श्रीकृष्णाय परब्रह्मणे नमः

श्री मेल्लडुर् नारायणभट्टतिरेः कृतिषु  
॥ श्रीमन्नारायणीये षट्चत्वारिंशं दशकम् ॥

*This document has been prepared by*

*Sunder Kidāmbi*

*with the blessings of*

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

*His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam*

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

॥ শ্রীমন্নারাযণীযে ষট্চত্রারিংশং দশকম্ ॥

বিশ্বরূপপ্রদর্শনবর্ণনম্

অযি দেব পুরা কিল ত্রযি

স্বযমুত্তানশযে স্তনক্ৰযে।

পরিজৃম্ভণতো ব্যপার্বতে

বদনে বিশ্বমচষ্ট বল্লরী ॥ 46.1 ॥

পুনরপ্যথ বালকৈঃ সমং

ত্রযি লীলানিরতে জগৎপতে।

ফলসঞ্চয়বঞ্চনক্রুধা

তব মৃদ্বোজনমুচুরভকাঃ ॥ 46.2 ॥

অযি তে প্রলযারধৌ ব্রিভো

ক্ষিতিতোযাদিসমস্তভক্ষিণঃ।

মৃদুপাশনতো রুজা ভরে -

দিতি ভীতা জননী চুকোপ সা ॥ 46.3 ॥

অযি দুর্দিনযাত্মক ত্রযা

কিমু মৃৎসা বত বৎস ভক্ষিতা।

ইতি মাতৃগিরং চিরং ব্রিভো

ব্রিতথাং ত্রং প্রতিজঞ্জিষে হসন্ ॥ 46.4 ॥

অযি তে সকলৈর্ব্রিনিশ্চিতে

ব্রিমতিশ্চেদ্বদনং ব্রিদার্যতাম্।

इति मातृरिभर्त्सितो मुखं  
रिक्संपद्मनिभं र्यदारयः ॥ 46.5 ॥

अपि मृल्लरदर्शनोऽसुकां  
जननीं तां बहू तर्पयन्निर।  
पृथिवीं निथिलां न केरलं  
डुरनान्यप्यथिलान्यदीदृशः ॥ 46.6 ॥

कुहचिद्भनमम्बुधिः क्लृचिं  
क्लृचिदभ्रं कुहचिद्रसातलम्।  
मनुजा दनुजाः क्लृचिं सुरा  
ददृशे किं न तदा र्ददाने ॥ 46.7 ॥

कलशाम्बुधिशायिनं पुनः  
पररैकुष्ठपदाधिरासिनम्।  
स्वपुरश्च निजार्भकात्प्रकं  
कतिधा र्दरां न ददर्श सा मुखे ॥ 46.8 ॥

रिक्सद्भुरने मुखोदरे  
ननु डूयोऽपि तथारिधाननः।  
अनया स्फुटमीक्षितो भरा -  
ननरस्थां जगतां वतातनोः ॥ 46.9 ॥

धृततद्भुधियं तदा ऋणं  
जननीं तां प्रणयेन मोहयन्।  
स्तनमम्बु दिशेत्युपासजन्  
भगवन्नद्भुतबाल पाहि माम् ॥ 46.10 ॥

॥ इति श्रीमन्नारायणीये षट्चत्वारिंशं दशकं समाप्तम् ॥